केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में
14 से 26 सितम्बर 2009 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजन।

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में 14 से 26 सितम्बर 2009 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। आज दिनांक 14 सितम्बर 2009 में हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन दीप प्रज्जवलन एवं सरस्वती वन्दना से प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर तत्काल भाषण की एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें 11 प्रतिभागियों ने अलग–अलग विषय पर अपने विचार प्रकट किए। निर्णायक मण्डल के अनुसार वर्तमान राजनिति विषय पर प्रथम श्रीमति अनीता मेहता सुन्दरता विषय पर डा. सत्येन्द्र कुमार द्वितीय और अहंकार विषय पर त्रितीय डा. नीरज कुलश्रेष्ठ रहे। हिन्दी पखवाड़े के दौरान तत्काल भाषण के अलावा टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए आवेदन पत्र लेखन, प्रतियोगिता, नगर स्तर पर वर्तमान संदभों में भारतीय संस्कृति विषय पर भाषण प्रतियोगिता, प्रश्नोंत्तरी प्रतियोगिता, तकनीकी पोस्टर प्रदर्शनी प्रतियोगिता तथा कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जायेगा। समापन अवसर पर प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष (2008–09) भर हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने वाले प्रभाग/अनुभाग को चलवैजयन्ती प्रदान की जायेगी। तथा पूरे वर्ष (2008–09) हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक एवं राजभाषा हिन्दी इकाई के प्रभारी अधिकारी डा0 रामशंकर त्रिपाठी ने हिन्दी सप्ताह के आयोजन का उद्देश्य एवं पखवाड़ा के कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा दिया। डा0 त्रिपाठी ने सभी कर्मियों से हिन्दी में कार्य करने की अपील करते हुए कहा कि हमारे देश के 90 प्रतिशत लोगों को अंग्रेजी भाषा का बिल्कुल ही ज्ञान नहीं है अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं का ज्ञान अनुचित नहीं है किन्तु नये विचार और नवीन चिंतन अपनी मात् भाषा द्वारा ही परफूटित हो सकते हैं।

संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने करनाल के माननीय जे.एस.अहलावत का संस्थान आगमन पर हार्दिक स्वागत किया तथा संस्थान की उपलब्धियों के बारें में चर्चा करते हुए बताया इस संस्थान द्वारा हरियाणा, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में कुल मिलाकर लगभग 1.7 मिलियन हेक्टेयर लवणग्रस्त भुमियों को सुधारा जा चुका है। इन भुमियों के सुधारने से देश को 8 से 10 मिलियन टन अतिरिक्त खाद्यान की पूर्ति हो रही है। निदेशक ने संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध प्रायोगों जैसे बहुउद्देशीय खेती, गिरते भूजल स्तर को बनाये बचाने हेतु भूजल पुर्नभरण विभिन्न लवण सहनशील प्रजातियों, सुगंधित एवं औषधियों पौधों के साथ–साथ संस्थान में चल रही अन्य परियोजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। निदेशक ने बताया कि इस वर्ष संस्थान द्वारा नई शोध पत्रिकाओं को द्विभाषी प्रकाशित किया गया है ताकि नई तकनीक किसानों तक पहुँचे और किसान व कृषि से जुड़े व्यक्तियों को सीधा फायदा हो सके। निदेशक ने कहा कि संस्थान द्वारा प्रकाशित पहली ही ''कृषक किरण पत्रिका को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अपने स्थापना दिवस पर ''गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से नवाजा गया है। डा0 गुरबचन सिंह ने कुछ उदाहरण दिये जिससे यह सिद्व होता है कि वर्तमान परिवेश में हिन्दी में न केवल भारतीय संदर्भों बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रगतिशील भाषा बनने की योग्यता रखती है। हिन्दी शब्द भंडार वाली और विश्व की सर्वाधिक विकसित व्याकरण वाली जीवन्त भाषा है। डा0 गुरबचन सिंह कहा कि हिन्दी के विकास के लिये मानसिकता बदलनी आवश्यक है। 6 दशक बाद भी हिन्दी भाषीय क्षेत्रों में राजभाषा के प्रति निष्ठा और प्रेम में कमी कें कारण आज यह स्थिति बनी हुई है। आज भी सरकारी स्तर पर हिन्दी राजभाषा को आगे बढाने के लिये प्रयास किये जा रहें है। यदि इन प्रभागों को देश के सभी नागरिक गंभीरता से लें तो निश्चित ही राजभाषा को सम्मान मिलेगा।

निदेशक ने कहा कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। जिसकी 70 प्रतिशत जनसंख्या गांव में रहती है उन्होने वैज्ञानिकों से अपील की कि हमारा संस्थान कृषि से जुड़ा होने के कारण अधिक से अधिक शोध पत्र हिन्दी में प्रकाशित किये जाये । ताकि किसानों को इसका सीधा फायदा हो सके। हिन्दी राष्ट्र एकता व राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है इसके प्रयोग से हमें गौरवान्वित महसूस करना चाहिये।

इस अवसर पर राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए माननीय कृषि मंत्री श्री शरद कुमार एवं महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डा. मंगला राय द्वारा भेजे गए संदेशों के माध्यम से संस्थान के निदेशक डा0 गुरबचन सिंह ने भी अपने संदेश के माध्यम से अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में ही करने का आह्‌वान किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा उद्‌घाटन समारोह समारोह के मुख्य अतिथि एवं जिला करनाल के उपायुक्त माननीय श्री जे.एस अहलावत (आई.ए.एस) ने इस अवसर पर कहा कि राजभाषा के प्रति प्रेम और समर्पण से ही स्वदेश के प्रति प्रेम की भावना जागृत होती है जिसके लिये केन्द्र सरकार का राजभाषा विभाग व सभी संस्थायें हर संभव कोशिश कर रहे हैं। ताकि अधिक से अधिक कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग हो। श्री अहलावत ने कहा कि हिन्दी को जन–जन तक पहुंचाने में पत्रकारिता के साथ–साथ टी.वी चैनल्स की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उपायुक्त ने कहा कि हिन्दी को पढ़ने व जानने वाले व्यक्तियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। विदेशों में भी लोग हिन्दी को पढ़ना सीख रहे हैं। लेकिन लोगों की जो पूरानी मानसिकता है वह इस क्षेत्र में आड़े आ रही है उन्होने कहा कि हिन्दी को और अधिक समृद्व बनाने के लिये शब्दावली बनाई जा रही है। वैज्ञानिकों और तकनीकी भाषाओं का हिन्दी में उपयोग किया जा रहा है तथा सरकारी स्तर पर निरीक्षण की प्रक्रिया भी की जा रही है । श्री अहलावत ने संस्थान कर्मियों से आहवान किया कि सभी को अपने कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिये। उपायुक्त ने कहा अंग्रेजी को जबरदस्ती न थोप कर हिन्दी भाषा को सम्मान

दें। हमे हिन्दी के प्रति मानसिकता बदलनी होगी क्योकि उन्होने पुर्वी प्रदेशों के उदाहरण देते हुए कहा कि वे वहां के लोग टेलीविजन के कार्यक्रमों और हिन्दी फिल्मों को आसानी से समझ सकते हैं। अन्त में उन्होने एक दोहे के माध्यम से कहा कि जिसको अपनी हिन्दी भाषा और अपने देश पर गर्व नहीं है वह नर नहीं पशु के समान है।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के मुख्य अतिथि एवं करनाल के उपायुक्त माननीय श्री जे.एस अहलावत, आई.ए.एस ने दीप प्रज्जवलित किया। उपायुक्त ने संस्थान की उपलब्धियों की सराहना करते हुये खुशी जाहिर की। अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि यह दिवस हमें अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व के प्रति सचेत व स्मरण कराता है कि सभी कार्यालयों को अपना कार्य हिन्दी में करना चाहिए ।

धन्यवाद प्रस्ताव हिन्दी अनुवादक श्रीमती रश्मि शर्मा द्वारा किया गया। तथा संस्थान के वैज्ञानिक डा. रामेश्वर लाल मीणा कार्यक्रम के संयोजक एवं मंच संचालक रहे।